

# Nostalgic hymn

---

*Many a morning we stood together  
Humming in tune the Morning Prayer.  
Seldom we go now to light the lamp;  
Seldom is revelry and seldom is tramp.*

*Many a noon we sat together  
Conceiving a plan to lay another.  
The parsed table now searches the noble,  
Astute believers in self are unable.*

*Many an evening we flocked together  
Sipping the tea and blowing the lather.  
The talks now have veered to reticence,  
Bustling lobby now homing silence.*

*Many a night we gazed together  
To skies, to blues and felt the weather.  
The beds now too comforting to leave  
Of intimacy I say let not bereave.*

**-Sanjay Adhikari**

---

# स्वार्थ

---

मैं हूँ पतझड़ के पत्तों-सा, बिखरा हूँ यहाँ-वहाँ,  
कौन संभालेगा मुझको, क्यों कोई उठाएगा?

जोड़ेगा मुझको जो कोई, वो आग लगा देगा,  
बढ़ाकर फिर वो ताप, मुझे राख बना देगा।

संभाला था उस दरख्त ने मुझको, वक्त आया तो छोड़ दिया,  
जब दे न सका मैं कुछ उसको, सब रिश्ता-नाता तोड़ दिया।

हरा-भरा था वह साथ मेरे, टूँट है अब मेरे बिना,  
पर न पुकारेगा वह मुझको, है उसमें अहम् भरा।

खिलाई धरती ने भी फूल-फसलें, क्या पुण्य कमाया है?  
जुड़कर इन दरख्तों के ज़रिये, अपना भाग्य जगाया है।

बरसाया बादलों ने पानी, हम पर एहसान जताया है?  
कौन जाने कालापन हटा, खुद को निर्मल बनाया है।

चंदा ने भी रात में हमें, चांदनी का दान दिया,  
पर चुपके-चुपके खुद अपने को सूरज से छिपा लिया।

देखकर इन सब देवताओं को क्या मैं जिंदा रह पाऊँगा?  
जलकर मैं अब, बढ़ाकर ताप, राख बनकर उड़ जाऊँगा।

*-Vinay Sehra*

---

# Thoughts

---

*The blissful ignorance of my childhood  
Is coming back to fore.  
My thoughts lie clouded  
As if haunted by demons of yore.*

*The two ends of the streams of time  
Have merged into one.  
The genesis and the renaissance,  
You can distinguish between none.*

*The star studded sight of the sparkling sky  
Infuses both hope and despair.  
My heart beats with every twinkle,  
Wanting that touch, that can love and care.*

*That touch be not of a lover or a healer;  
That touch be not of a mother or a child;  
The touch I want is a sweet little touch,  
The touch of belief on my soul and my mind.*

**-Mohit Malhan**

---

# कम से कम इंसान रहे

---

बीस शतक के बाद तू मानव खुद को सभ्य - महान कहे,  
ईश्वर ने थी धरा बनाई, तू खुद को भगवान कहे।  
जल को तूने क्षार दिया और धरा को तूने क्षुब्ध किया,  
जीव छाया की टोह में अब हैं खुले वनों को छान रहे।  
अतुल शक्ति का खूब परिचय, हिम-खण्ड अब क्षीण हुए,  
पर जब तक ये आकाश क्षीण हो, उससे पहले ध्यान रहे,  
औरों की तू छोड़ सोच पर खुद पर इतनी दया तो कर,  
धरा को इतना जीवन दे कि कम से कम इंसान रहे।।

*-Naren Gupta*

---

# August

---

*The first golden leaf  
Touches the ground.  
The gods of autumn  
Are marked with rust.  
The sky turns copper and  
Trees howl in loneliness.  
The mist starts its journey.  
Let there be August.*

**-Pradeep Bhatt**

---